

MP Board Class 9th Hindi Navneet Solutions एकांकी

Chapter 1 दीपदान

बोध प्रश्न

अति लघु उत्तरीय प्रश्न

प्रश्न 1.

पन्ना कौन थी?

उत्तर:

पन्ना चित्तौड़ के राजसिंहासन के उत्तराधिकारी महाराणा साँगा के पुत्र कुँवर उदयसिंह की धाय थी।

प्रश्न 2.

चित्तौड़ में 'दीपदान' का उत्सव क्यों मनाया जा रहा था?

उत्तर:

चित्तौड़ में 'दीपदान' का उत्सव बनवीर के षड्यंत्र द्वारा मनाया जा रहा था।

प्रश्न 3.

पन्ना किसका बलिदान करती है?

उत्तर:

इस एकांकी में पन्ना अपने एकमात्र पुत्र चन्दन का बलिदान करती है।

प्रश्न 4.

चित्तौड़ का कुलदीपक कौन था?

उत्तर:

चित्तौड़ का कुलदीपक सज परिवार का एकमात्र पुत्र कुँवर उदयसिंह था।

प्रश्न 5.

बनवीर कौन था? और वह कुँवरजी को क्यों मारना चाहता था?

उत्तर:

बनवीर महाराणा साँगा के छोटे भाई पृथ्वीसिंह की दासी का एक पुत्र था। वह महत्वाकांक्षी था। राज्य प्राप्त करने के षड्यंत्र द्वारा वह उदयसिंह की हत्या कर स्वयं राजा बनना चाहता था।

लघु उत्तरीय प्रश्न

प्रश्न 1.

कीरतबारी ने उदयसिंह की सहायता किस प्रकार की?

उत्तर:

कीरतबारी नाई जाति का है। उसका काम राज्य परिवार में होने वाली दावतों की झूठी पत्तल उठाना था। वह एक राजभक्त सेवक था। पन्ना धाय को उसकी राजभक्ति पर पूरा भरोसा था। जब पन्ना धाय को बनवीर के षड्यंत्र का पता लग जाता है तो वह उदयसिंह को झूठी पत्तलों के टोकरे में छिपाकर राजमहल से बाहर बनास नदी के किनारे

स्थित श्मशान भूमि पर ले जाने का आदेश देती है। कीरतबारी यदि उदयसिंह को टोकरी में छिपाकर नहीं ले जाता तो उदयसिंह के प्राणों की रक्षा नहीं हो सकती थी। इस प्रकार कीरतबारी ने उदयसिंह के प्राणों की रक्षा करके अपनी राजभक्ति का परिचय दिया है।

प्रश्न 2.

पन्ना धाय कुँवर उदयसिंह की रक्षा क्यों करना चाहती थी?

उत्तर:

पन्ना धाय कुँवर उदयसिंह का पालन-पोषण करने वाली धाय माँ थी। वह कुँवर उदयसिंह को अत्यधिक स्नेह करती थी। दासी पुत्र बनवीर चित्तौड़ राज्य सिंहासन के एकमात्र उत्तराधिकारी कुँवर उदयसिंह की हत्या कर चित्तौड़ का राजा बनना चाहता था। उसने इसी मकसद को प्राप्त करने के लिए उस समय दीपदान का उत्सव मनाया। पन्ना ने बनतीर के षड्यंत्र को जान लिया। अतः उसने कुँवर उदयसिंह को उस उत्सव में जाने से रोक लिया। अपने भावी शासक के प्राणों की रक्षा के लिए वह दुष्ट बनवीर के सामने अपने एकमात्र पुत्र चन्दन का बलिदान चढ़ा देती है। इस प्रकार अपने पुत्र का बलिदान करके उसने उदयसिंह के प्राणों की रक्षा की है।

प्रश्न 3.

उदयसिंह पन्ना धाय से रूठकर क्यों सो गया था?

उत्तर:

बनवीर राजमहल में दीपदान का उत्सव मनाने की आज्ञा देता है। इस उत्सव में तुलजा भवानी के सामने सुन्दर-सुन्दर लड़कियाँ नृत्य करती हैं। कुँवर उदयसिंह उत्सव में जाकर नृत्य देखने की इच्छा पन्ना धाय के समक्ष करता है। पर पन्ना को इस उत्सव की आड़ में बनवीर द्वारा रचे गये षड्यंत्र की गंध लग जाती है। अतः वह कुँवर को वहाँ नहीं जाने देती है। बस इसी बात से। कुँवर रूठकर बिना भोजन किये ही अपने शयनकक्ष में चले गये।

प्रश्न 4.

धाय माँ का उदयसिंह के प्रति वात्सल्य स्पष्ट कीजिए।

उत्तर:

धाय माँ ममता की साक्षात् मूर्ति है। वह कुँवर को अपने प्राणों से भी अधिक प्यार करती है। उदयसिंह की धाय होने के साथ-ही-साथ उसकी सुरक्षा का भी वह विशेष ध्यान रखती है। अतः जैसे ही उसे उदयसिंह की हत्या के षड्यंत्र के विषय में जानकारी होती है तो तुरन्त ही राज्यभक्त एवं झूठी पत्तल उठाने वाले कीरतबारी को विश्वास में लेकर झूठी पत्तलों के बीच में कुँवर उदयसिंह को छिपाकर सुरक्षित स्थान पर पहुँचा देती है। बनवीर के आने पर वह अपने सोये हुए पुत्र चन्दन का बलिदान करके अपनी अद्भुत स्वामिभक्ति का परिचय देती है।

प्रश्न 5.

उदयसिंह के विरुद्ध रचे जाने वाले षड्यंत्र का आभास पन्ना को कैसे होता है?

उत्तर:

उदयसिंह के विरुद्ध रचे जाने वाले षड्यंत्र का आभास पन्ना को दासी साँवली की उस सूचना से मिलता है जिसमें साँवली बताती है कि कुछ सैनिकों को अपनी ओर मिलाकर बनवीर ने विक्रमादित्य की हत्या कर दी है और उसका अगला लक्ष्य उदयसिंह है।

दीर्घ उत्तरीय प्रश्न

प्रश्न 1.

निम्नलिखित पंक्तियों का आशय स्पष्ट कीजिए

(अ) चारो तरफ जहरीले सर्प घूम रहे हैं।

उत्तर:

आशय-जब उदयसिंह दीपदान उत्सव में जाने की जिद्द करने लगता है तो पन्ना धाय भावी अनिष्ट की आशंका से उसे उसमें भाग लेने से रोकती है। जब उदयसिंह कहता है कि मैं अकेला ही वहाँ चला जाऊँगा तब पन्ना धाय उसे समझाते हुए कहती है कि तुम रात में अकेले कहीं नहीं जाओगे क्योंकि यहाँ चारों तरफ दुश्मन रूपी जहरीले सर्प घूम रहे हैं और वे किसी भी समय तुम्हें डस सकते हैं अर्थात् तुम्हारा वध कर सकते हैं।

(ब) दिन में तुम चित्तौड़ के सूरज हो कुँवर और रात में तुम राजवंश के दीपक हो।

उत्तर:

आशय-पन्ना धाय कुँवर उदयसिंह को समझाते हुए कहती है कि तुम चित्तौड़ के सूरज हो। सूरज की तरह तुम्हारा उदय हुआ है तभी तुम्हारा नाम उदयसिंह रखा गया है। अतः दिन में तो तुम चित्तौड़ के सूरज हो और रात में तुम राजवंश के दीपक हो।

प्रश्न 2.

“लाल तुम्हारी माला मैं नहीं गूँथ सकी। तुम्हारा जीवन अधूरा होने जा रहा है तो माला कैसे पूरी होगी” इस वाक्य में छिपी करुणा को स्पष्ट कीजिए।

उत्तर:

पन्ना धाय को जब यह पूरा विश्वास हो जाता है कि बनवीर विक्रमादित्य की हत्या के पश्चात् अगला निशाना उदयसिंह को ही बनायेगा तो वह अपनी चतुराई से कीरतबारी के सहयोग से उदयसिंह को तो सुरक्षित स्थान पर पहुँचा देती है पर इस रहस्य को छिपाये रखने के लिए कुँवर उदयसिंह की शैया पर अपने इकलौते पुत्र चन्दन को सुला देती है। चन्दन सोने से पूर्व अपनी टूटी हुई माला को गूँथने की बात कहता है तो धाय माँ उसे कल गूँथने का आश्वासन देकर सुला देती है। लेकिन अब उसके हृदय में चन्दन की होने वाली हत्या की आशंका से अनेकानेक भाव उत्पन्न होते हैं और उन्हीं विचारों में खोकर वह कहने लग जाती है कि हे लाल ! तुम्हारी माला मैं नहीं गूँथ सकी। अत्याचारी बनवीर के हाथों तुम्हारा जीवन अधूरा होने जा रहा है तो फिर तुम्हारी माला गूँथकर मैं किसे पहनाऊँगी। यह कहकर उसके हृदय में करुणा का ज्वार उठने लगता है।

प्रश्न 3.

इस एकांकी में निहित पन्ना धाय के त्याग व एकनिष्ठा के भाव का वर्णन कीजिए।

उत्तर:

‘दीपदान’ एकांकी की प्रधान पात्र पन्ना धाय है। पन्ना धाय में अपूर्व बलिदान एवं त्याग की भावना है। उसके मन मानस में स्वामिभक्ति की भावना कूट-कूट कर भरी हुई है। इसी भावना के वशीभूत होकर वह राजवंश के अन्तिम दीपक उदयसिंह की प्राण रक्षा के लिए अपना सब कुछ बलिदान कर देती है। उसके जीवन में कर्तव्यपालन सर्वोपरि है।

उसका त्याग अभूतपूर्व है। उसके त्याग में स्वार्थ की गन्ध नहीं है। राजवंश के उत्तराधिकारी उदयसिंह की प्राणरक्षा के लिए वह अपने इकलौते पुत्र चन्दन की बलि दे देती है। चन्दन को मौत की शैया पर सुलाते समय वह कहती है-“दीपदान! अपने जीवन का दीप मैंने रक्त की धारा में तैरा दिया है। ऐसा दीपदान भी किसी ने किया है?” निश्चय ही ऐसा दीपदान कोई भी नहीं कर सका। यह उसका अपूर्व त्याग था। इस प्रकार हम कह सकते हैं कि पन्ना धाय में एकनिष्ठ स्वामिभक्ति की भावना एवं अपूर्व त्याग था।

भाषा अध्ययन

प्रश्न 1.

निम्नलिखित शब्दों में से कुछ शब्दों की वर्तनी अशुद्ध है, उन्हें शुद्ध कीजिए
चित्तौड़, प्रस्थान, इर्ष्या, विक्रमादीत्य, कुंवरजी, अन्नदाता, शैया, अट्टास, राजपुतानी, शीर्षक, छत्राणी।
उत्तर:

अशुद्ध	शुद्ध	अशुद्ध	शुद्ध
इर्ष्या	ईर्ष्या	विक्रमादीत्य	विक्रमादित्य
अट्टास	अट्टहास	कुंवरजी	कुँवरजी
राजपुतानी	राजपूतानी	छत्राणी	क्षत्राणी
शैया	शय्या		

प्रश्न 2.

निम्नलिखित शब्दों के विलोम शब्द लिखिए उदय,
जीवन, इच्छा, ईर्ष्या, रात।

उत्तर:

शब्द	विलोम शब्द	शब्द	विलोम शब्द
उदय	अस्त	जीवन	मरण
इच्छा	अनिच्छा	ईर्ष्या	स्नेह
रात	दिन		

प्रश्न 3.

एकांकी में आए शब्द सोना, जाल आदि
अनेकार्थी शब्द हैं। पाठ में आए ऐसे ही
अनेकार्थी शब्द छाँटकर उनके दो-दो अर्थ
लिखिए।

उत्तर:

शब्द	अर्थ
सोना	– निद्रा, धातु का नाम
लाल	– पुत्र, रंग का नाम
ताल	– तालाब, पग चाल
काल	– समय, मृत्यु
जाल	– धोखा, पाश
जवान	– नवयुवक-युवती, वाणी
पहाड़	– पर्वत, रुकावट
सूरज	– सूर्य, कुल के सूरज या देश के सूरज
बारी	– क्रम, नाई, जाति का कर्मी
दीपक	– दीया, कुल के दीपक
उजाला	– प्रकाश, वंश को चलाने वाला
तिनका	– छोटा व्यक्ति, घास।

प्रश्न 4.

निम्नलिखित शब्दों में से तत्सम और तद्भव अलग-अलग करके लिखिए।

उत्तर:

तत्सम शब्द – शय्या, कक्ष, उदय, दासी, दीपक, प्रस्थान, पुत्र, लता।

तद्भव शब्द – सूरज, रात, भोजन, नाच, पैर, पत्थर, सिर।